सृजनात्मकता एवं सृजनात्मक चिन्तन

Sub-Topic -

1- सृजनात्मकता का अर्थ एवं परिभाषाएँ
2. सृजनात्मकता के गुण
3. सृजनात्मकता के तत्व
4. सृजनात्मकता की प्रकृति एवं विशेषताएँ
5. सृजनात्मकता के सिद्धान्त
6. सृजनात्मक चिन्तन एवं महत्व

सृजनात्मकता क्या है ?

सृजनात्मकता शब्द अंग्रेजी के क्रियेटिविटी से बना है। इस शब्द के समानान्तर विधायकता, उत्पादन, रचनात्मकता डिस्कवरी आदि का प्रयोग होता है। फादर कामिल बुल्के ने क्रियेटिव शब्द के समानान्त सर्जनात्मक, रचनात्मक सर्जक शब्द बताए।

सृजन Creativity वह अवधारणा है जिसमें उपलब्ध साधनों से नवीन या अनजानी वस्तु, विचार या धारणा को जन्म दिया जाता है। सृजनात्मकता से अभिप्राय है रचना सम्बंधी योग्यता, नवीन उत्पाद की रचना। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सृजनात्मक स्थिति अन्वेषणात्मक होती है।

रूश के अनुसार, - सृजनात्मकता मौलिकता वास्तव में किसी भी प्रकार की क्रिया में घटित होती है।'

सृजनात्मकता ज्ञान, सूचना तथा कौशल के क्षेत्र में पायी जाती है नवीन तथ्यों, सिद्धान्तों का प्रतिपादन, सूचना ग्रहण करने तथा कराने की नवीन प्रणालियों तथा नवीन वस्तु, विचार की प्रस्तुति सृजनात्मकता के अन्तर्गत आती है।

सृजनात्मकता का अर्थ है नए, मौलिक और उपयोगी विचारों का निर्माण करना। यह एक ऐसी मानसिक क्षमता है जिसके द्वारा व्यक्ति किसी समस्या का समाधान नए और अनोखे तरीके से करता है। सृजनात्मकता केवल कला एवं साहित्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन के हर क्षेत्र में आवश्यक है।

सृजनात्मकता के अन्तर्गत व्यक्ति अपनी कल्पनाशक्ति, अनुभव और ज्ञान का उपयोग करके कुछ नया उत्पन्न करता है। एक सृजनात्मक व्यक्ति सामान्य चीजों को भी अलग दृष्टिकोण से देखता है और उनमें नवीनता लाने का प्रयास करता है। उदाहरण के लिए, एक छात्र यदि किसी प्रश्न का उत्तर अलग और प्रभावी ढंग से देता है, तो यह उसकी सृजनात्मकता को दर्शाता है।

सृजनात्मकता के कई प्रकार होते हैं, जैसे कलात्मक, वैज्ञानिक, सामाजिक और व्यवहारिक सृजनात्मकता। कलात्मक सृजनात्मकता चित्रकला, संगीत और नृत्य में दिखाई देती है, जबकि वैज्ञानिक सृजनात्मकता नए आविष्कारों और खोजों में प्रकट होती है। सामाजिक सृजनात्मकता समाज की समस्याओं का समाधान खोजने में सहायक होती है।

शिक्षा के क्षेत्र में सृजनात्मकता का विशेष महत्व है। यह विद्यार्थियों को नई सोच विकसित करने, समस्याओं का समाधान करने और आत्मनिर्भर बनने में मदद करती है। सृजनात्मकता के माध्यम से विद्यार्थी पढ़ाई में रुचि लेते हैं और उनका आत्म-विश्वास भी बढ़ता है।

सृजनात्मकता को विकसित करने के लिए आवश्यक है कि विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से सोचने का अवसर दिया जाए। उन्हें प्रश्न पूछने, नई चीजें सीखने और अपने विचार व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इसके अलावा, शिक्षकों को भी शिक्षण में नए-नए तरीकों का उपयोग करना चाहिए ताकि विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का विकास हो सके।

अन्त में कहा जा सकता है कि सृजनात्मकता मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण गुण है, जो व्यक्ति को प्रगति और सफलता की ओर ले जाता है। यह न केवल व्यक्तिगत विकास में सहायक है, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सृजनात्मकता की परिभाषाएँ -

1) गिलफोर्ड के अनुसार,
"सृजनात्मकता वह क्षमता है जिससे व्यक्ति विभिन्न प्रकार के नए विचार उत्पन्न करता है।"

2) टॉरेंस के अनुसार -
"सृजनात्मकता एक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति समस्याओं को पहचानता है, समाधान खोजता है और अपने विचारों का परीक्षण करता है। या प्रस्तुत करता है।"

3) ड्रेवर के अनुसार - "सृजनात्मकता वह शक्ति है जिसके द्वारा व्यक्ति कुछ नया और मूल्यवान उत्पन्न करता है।"

4) क्रो एवं क्रो के अनुसार - "सृजनात्मकता का सम्बंध कल्पना शक्ति और नवीन विचारों के निर्माण से है।"

5) कोल एवं ब्रूस के अनुसार - "सृजनात्मकता एक मौलिक उत्पादन के रूप में मानव मन की ग्रहण करके अभिव्यक्त करने और गुणांकन एवं क्रिया करने की योग्यता है।"

6) सी. वी. गुड के अनुसार - "सृजनात्मकता का विचार है जो किसी समूह में विस्तृत सातत्य का निर्माण करता है। सर्जनात्मकता के कारक हैं - साहचर्य, आदर्शात्मक मौलिकता, अनुकूलता, सातत्य लोच तथा तार्किक विकास की योग्यता"

7) स्टेन के अनुसार - जब किसी कार्य का परिणाम नवीन हो, जो किसी समय में समूह द्वारा उपयोगी मान्य हो, वह कार्य सृजनात्मकता कहलाता है।"

उपरोक्त सभी परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि सृजनात्मकता का संबंध नवीनता, मौलिकता और उपयोगिता से है।

2- सृजनात्मकता के गुण—

1) इसमें नवीन तत्वों का समावेश होता है।
2) यह एक योग्यता है।
3) इसके द्वारा व्यक्तियों में प्रतिभा का विकास होता है।
4) जिस कार्य में यह पायी जाती है वह समाज के लिए हितकारी होता है।
5) यह सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार की होती है।
6) यह किसी भी कार्य को एक नई दिशा प्रदान करती है।
7) ऐसे व्यक्तियों का बौद्धिक स्तर उच्च होता है।
8) ऐसे व्यक्तियों की काल्पनिक शक्ति भी उच्च होती है।
9) ऐसे छात्रों में जिज्ञासा का अभाव अत्यधिक होता है।
10) वह वास्तविक एवं व्यावहारिक होते हैं।
11) यह बालक दूरदर्शी होते हैं अर्थात् वह आगे की सोचते हैं।
12) उनमें सौन्दर्यात्मक कौशल का स्तर उच्च होता है।

सृजनात्मकता के तत्व

सृजनात्मकता के मुख्य चार तत्व है -
1- प्रवाह (Fluency) 2- विविधता / लचीलापन (Flexibility)
3- मौलिकता (Originality) और 4- विस्तारण (Elaboration)

ये तत्व मिलकर किसी व्यक्ति को कुछ नया, अनोखा और उपयोगी सोचने या बनाने में सक्षम बनाते है। वर्तमान में इन्हीं तत्वों की माप द्वारा व्यक्ति की सृजनात्मक शक्ति का पता लगाया जाता है। अत; यहाँ उनका वर्णन संक्षेप में प्रस्तुत है।

1- प्रवाह (Fluency) - किसी समस्या के हल अथवा किसी वस्तु के निर्माण के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बने रहने को प्रवाह कहते हैं। सृजनात्मक व्यक्तियों के चिन्तन में प्रवाह होता है।

2- विविधता / लचीलापन (Flexibility) - किसी वस्तु को अनेक रूप में प्रस्तुत करने अथवा किसी समस्या के अनेक हल प्रस्तुत करने की क्षमता को विविधता कहते है। टॉरेन्स के अनुसार जिन व्यक्तियों में यह क्षमता होती है, उनमें सृजनात्मकता होती है।

3- मौलिकता (Originality) - मौलिकता का सम्बंध नवीनता से होता है। किसी वस्तु को नया रूप देने, किसी नए विचार को प्रस्तुत को प्रस्तुत करने अथवा किसी समस्या को नए ढंग से सुलझाने की शक्ति को मौलिकता कहते हैं। टॉरेंस की दृष्टि से मौलिकता सृजनात्मकता का सबसे अधिक महत्वपूर्ण तत्व होता है।

4- विस्तारण (Elaboration) - किसी विचार को अपने अनुभवों

के आधार पर विस्तृत व्याख्या करने को विस्तारता कहते हैं। टॉरेन्स के अनुसार सृजनात्मक व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत व्याख्या में नवीनता होती है और मौलिकता होती है।

सृजनात्मकता के कुछ अन्य तत्व भी होते हैं उनके आधार पर भी सृजनात्मकता का मापन किया जा सकता है। संक्षेप में उनका वर्णन इस प्रकार है-

1. संवेदनशीलता (Sensitivity)-
जिन व्यक्तियों में संवेदनशीलता होती है वे सृजनात्मक होते हैं, विशेषकर परिवर्तन के प्रति

2. नवीनता (Novelty)-
नवीनता सृजनात्मकता का महत्वपूर्ण तत्व है। जब तक व्यक्ति में नवीनता के प्रति आकर्षण नहीं होगा, वह नवीन सृजन नहीं कर सकता।

3. स्वतंत्र निर्णय (Self-Decision)-
सृजनशील व्यक्तियों में आत्म विश्वास होता है, वे आत्म निर्भर होते हैं और वे स्वतंत्र रूप से निर्णय लेते हैं।

4) पुनर्परिभाषीकरण (Redefinalization)-
पुनर्परिभाषीकरण का अर्थ है किसी वस्तु पर किये गये विचार को पूर्व प्रचलित रूप में प्रस्तुत न कर उसे नए रूप में प्रस्तुत करना। यह भी सृजनात्मकता का तत्व होता है।

5) सृजनात्मक उत्पादन (Creative Production)-
सृजनात्मकता का महत्व मूलतत्व सृजनात्मक चिन्तन होता है, इसी से व्यक्ति नए विचार, नई रचना और नए उत्पादन करने में सफल होते हैं।

सृजनात्मकता की प्रकृति एवं विशेषताएं

सृजनात्मकता के स्वरूप एवं उसके सर्वमान्य गुण अथवा तत्वों को ही उसकी प्रकृति अथवा विशेषताएँ कहते हैं। इन्हें हम निम्नलिखित रूप से क्रमबद्ध कर सकते हैं।

1- सृजनात्मकता मनुष्य की वह योग्यता या शक्ति है, जिसके द्वारा वह नए-नए विचार प्रस्तुत करता है, नई-नई वस्तुओं का निर्माण करता है और नए-नए तथ्यों की खोज करता है।

2- सृजनात्मकता मनुष्य की वह योग्यता अथवा क्षमता है, जिसके द्वारा वह किसी समस्या के मौलिक हल खोजता है।

3. सृजनात्मकता की विशेषता है कि इसके द्वारा जो भी नए विचार प्रस्तुत होते हैं अथवा जो भी नई वस्तुएँ निर्मित होती है या जिन नए तथ्यों की खोज होती है, वे मानव जीवन के लिए उपयोगी होते हैं।

4. सृजनात्मकता जन्मजात होती है और इसकी अभिव्यक्ति एवं विकास अनुकूल पर्यावरण में होता है।

5. भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में भिन्न-भिन्न प्रकार की सृजनात्मकता होती है जैसे - कलात्मक, साहित्यिक, कौशलात्मक आदि।

6. सृजनात्मकता के मुख्य तत्व है, नवीनता, मौलिकता, प्रवाह, विस्तारता निर्णय आदि के द्वारा मापन किया जाता है।

सृजनात्मकता के सिद्धान्त

1- वंशानुक्रम का सिद्धान्त –

इस सिद्धान्त के अनुसार Creativity जन्मजात होती है यह बालक आपके पूर्वजों या अपने माता-पिता से लेकर आता है।

2- पर्यावरणीय सिद्धान्त –

यह वंशानुक्रम के विपरीत बोलता है कि यह जन्मजात नही होती अपितु इसका विकास पर्यावरणीय अनुभवों द्वारा होता है अर्थात् किसी के जीवन में किस व्यक्ति ने समाज में रहते हुए कितना अनुभव प्राप्त किया है।

3- सृजनात्मक स्तर का सिद्धान्त –

टेलर के अनुसार, कोई व्यक्ति उसी स्तर तक Creativity का विकास कर सकता है, जिस स्तर तक पहुँचने की उसकी क्षमता होती है।

4- गेस्टाल्ट का सिद्धान्त –

इनके अनुसार इसमें अन्तर्दृष्टि है जो कि नये विचारों से उत्पन्न होती है।

5- मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त –

फ्रायड के अनुसार, व्यक्ति में Creativity का विकास उसके अचेतन मन में संचित अतृप्त इच्छाओं के कारण होता है।

सृजनात्मक चिन्तन एवं महत्व

सृजनात्मक चिन्तन Creativity Thinking वह मानसिक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा व्यक्ति नए, मौलिक और उपयोगी विचारों या समाधानों को जन्म देता है। इसे अक्सर लीक से हटकर सोचने या समस्या समाधान के एक नए तरीके के रूप में देखा जाता है। इसमें व्यक्ति पारम्परिक सोच से हटकर किसी समस्या का नया समाधान खोजता है या किसी वस्तु। विचार को नए तरीके से प्रस्तुत करता है।

सरल शब्दों में,

जब हम किसी चीज को अलग ढंग से सोचते हैं, नए आइडिया बनाते हैं और समस्याओं का अनोखा समाधान निकालते हैं, तो उसे सृजनात्मक चिंतन कहते है।

अर्थात् " नए और उपयोगी विचारों को उत्पन्न करने की प्रक्रिया को सृजनात्मक चिंतन कहते हैं।

सृजनात्मक चिंतन का महत्व —

सृजनात्मक चिंतन का महत्व बहुत व्यापक है, क्योंकि यह व्यक्ति के व्यक्तिगत, शैक्षिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कुछ महत्व इस प्रकार से हैं-

1) समस्या समाधान में सहायक-

यह व्यक्ति को समस्याओं का नया और प्रभावी समाधान खोजने में मदद करता है।

2. नवाचार को बढ़ावा देना -

नए विचार और आविष्कार सृजनात्मक सोच के कारण ही संभव होते हैं।

3. व्यक्तित्व विकास -

इसमें आत्मविश्वास, स्वतंत्र सोच और निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है।

4- शिक्षा का सुधार -
विद्यार्थी रटने की बजाय समझकर और नए तरीके से सीखते हैं।

5. रोजगार के अवसर बढ़ाता है -
आज के समय में कंपनियाँ ऐसे लोगों को पसंद करती हैं जो नए और अलग तरीके से सोच सकें।

6. कल्पनाशक्ति का विकास -
सृजनात्मक चिंतन से कल्पना शक्ति मजबूत होती है, जो कला, लेखन, विज्ञान आदि में उपयोगी है।

7. समाज के विकास में योगदान -
नए विचार समाज की प्रगति और सुधार में मदद करते हैं।